International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, August - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चूरू जिले के भित्ति चित्रों में पशु एवं पक्षी चित्रण

डा. नरेन्द्र कुमार
सहआचार्य, चित्रकला विभाग,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

पशु एवं पक्षी चित्रण में चूरू में मुख्य रूप से ऊँट, घोड़े, हाथी, गाय, बैल, हिरण, बकरी, बन्दर, भालू आदि जानवरों का अंकन किया गया है। इसी प्रकार पक्षियों में यहाँ मोर, कमेड़ी, चील, अनल पक्षी, बतख, हंस, कबूतर, चिड़िया आदि को चित्रित किया गया है। पशुओं में यहाँ ऊँट का अधिक अंकन किया गया है, क्योंकि ऊँट यहाँ के सभी वर्ग के मनुष्य के लिए पालतू एवं उपयोगी जानवर रहा है। चाहे खेती हा, सवारी हो या सामान ढोने के लिये अथवा युद्ध व राजसी ठाठ–बाट सभी में यहाँ ऊँट की अधिक भूमिका रही है, अतरू ऊँटों का चित्रण हमें इस चूरू जिले के सभी भागों में मिलता है जिनमें मुख्य रूप में लालचन्द जी कोठारी की हवेली छापर में ऊँटों के एक झुण्ड का सुन्दर चित्रण है। इस चित्र में ऊँटों के एक झुण्ड को एक व्यक्ति घेरता हुआ ले जा रहा है उसके पीछे ही राजकीय सैनिक अपने घोड़ों पर सवार इन ऊँटी के पीछे दौड़ते हुए आ रहे हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, August - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऊँटों का इस चित्र में विभिन्न मुद्राओं में चित्रण है, जिन्हें गेरु, पीले व भूरे रंग से चित्रित किया गया है। इसी प्रकार घोड़ी में भी नीला, काला, पीला व गेरु रंग भरा गया है। इसी हवेली में एक तरफ ऊँटों की एक लम्बी कतार में भी चित्रित किया है जिसके ऊँटों में नीला रंग भी भरा गया है।

ऐसे ही ऊँटों का अन्य चित्रण हमें सरदारशहर में जयचन्द पींचा की हवेली के चित्र में पशुओं में ऊँट, बन्दर व पक्षियों में मोर आदि का भी मिलता है चूरू में बाघलों की हवेली, तारानगर में सतीमाता की छतरी, सालासर में समाधि की छतरियों आदि स्थानों पर ऊँट, घोड़ों का सामूहिक चित्रण है। इसी प्रकार हाथियों का भी विभिन्न जुलूसों, उत्सवों आदि के रूप में चित्रण किया गया है जिनमें नगर – श्री चूरू, सुराणा हवामहल, बाघलों की हवेली, सरदारशहर में कालूराम मंगल चन्द जम्मट की हवेली आदि में हाथियों का सुन्दर चित्रण है। इनके अतिरिक्त रतनगढ़, सुजानगढ़, राजगढ़, तारानगर आदि सभी भित्ति चित्रण स्थलों पर इन ऊँट, घोड़ों व हाथियों का अंकन विद्यमान है।

इनके अतिरिक्त काले हिरणों के आपस में परस्पर लड़ते हुए का चित्रण भालेरी स्थित स्वामियों के मन्दिर में अंकित है। गाय का चित्रण यहाँ भगवान कृ ष्ण द्वारा दूध दुहते हुये व अन्य मुद्राओं के साथ इजारा पट्टियों में किया गया है। वहीं बैलों का चित्रण हल जोतते हुये व पनघट पर लाव–चड़स खींचते हुए के रूप में किया गया है।

इसी प्रकार पक्षियों में यहाँ मोर का अत्यधिक रूप से चित्रण हुआ है, जिसमें मोर को स्वतन्त्र रूप में पेड़ पर पंख फैलाए हुए भवनों पर चित्रित किया है तो दूसरी तरफ रागिनी के पास मधुर स्वरों की तरफ आकर्षित करने का चित्रण किया गया है। कृष्ण जी का प्रिय पक्षी होने की वजह से मोर यहाँ पर दरबार प्रिय भी रहा है, जिसके कारण राजपुरुष व महिलाओं ने मोर को अपनी गोद में बैठाए हुए का चित्रण किया गया है, जिसमें सुराणा हवामहल, चूरू,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, August - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लिखमी चन्द टांटिया। बीदासर, बाघला राम मन्दिर, चूरू, इसी प्रकार चिड़ियों का सुन्दर अंकन रतननगर में केडिया मन्दिर में किया गया है। जिसमे फलों की टोकरी की तरफ दो चिड़िया बढ़ रही हैं। इसके अलावा चिड़ियों का अंकन सरदारशहर व तारानगर में भी व्यापक रूप से हुआ है। जलधरों में यहाँ माली का अंकन सेठानी का जोहड़ा चूरू में स्वास्तिक चिह्न के साथ किया गया है।

इस प्रकार यहां मानव जीवन की जन–झांकी के साथ–साथ पशु–पक्षियों का भी व्यापक चित्रण हुआ ळें

संदर्भः

1. ममता चतुर्वेदी – जयपुर शैली के भित्ति चिन्न, (अप्रकाशित शाध ग्रन्थ)
2. बनराज जोशी – चूरू दर्शन, पृ. 48
3. विजय शंकर श्रीवास्तव – शेखावाटी के भित्ति चित्रों में ऐतिहासिक कथानक एवं सामाजिक प्रथाएं, वरदा, वर्ष 28, अंक 2
4. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्प ग्रन्थ, पृ. 298
5. राजस्थान के इस प्रदेश में विवाहोत्सव के समय अग्नि की वेदी के पास जो चार छोटी लकड़ियां व तख्ती से युक्त बांस बांधा जाता है उसे थाम कहते हैं।
6. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्प ग्रन्थ, पृ. 290

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 8, August - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

7. डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा – राजस्थानी लोक गाथा का अध्ययन, पृ. 123–24
8. सुबोध अग्रवाल – मरु – श्री, वर्ष 15, अंक 2–3
9. कुंवर संग्राम सिंह जी के अनुसार
10. उक्त चित्र प्रसिद्ध चित्रकार श्री वेदपाल शर्मा (बन्नू जी) के कथनानुसार इस प्रकार का चित्रण करौली शैली में भी चित्रित किया गया है।
11. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्प ग्रन्थ, पृ. 298
12. डॉ. सत्य प्रकाश – राजस्थानी स्थापत्य सम्बन्धित नित्य प्रयोग के शब्द, रिसर्चर, पृ. 102–3
13. सुबोध अग्रवाल – मरु – श्री, वर्ष 14, अंक 2, 3